रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष-74, अंक : 22, 24-27 अगस्त 2017 तदनुसार 12 भाद्रपद सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आत्मा परम है, इन्द्रियाँ उससे डरती हैं

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

परो यत्त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत्।
अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद्दासपत्नी।।

शब्दार्थ-परावति = दूरदेश में **श्रुत्यम्** = प्रसिद्ध **नाम** = नाम **बिभ्रत्** = धारण करता हुआ **यत्** = जो **त्वम्** = तू **परः** = पर, उत्कृष्ट होता हुआ। **परमः** = अत्यन्त उत्कृष्ट **आजनिष्ठाः** = हुआ, **अतः+चित्** = इसलिए भी **इन्द्रात्** = तुझ इन्द्र से, आत्मा से **देवाः** = देव, इन्द्रियगण **अभयन्त** = मानो डरते-से हैं, क्योंकि यह **विश्वाः** = सम्पूर्ण **दासपत्नी :** = पाप-पालक **अपः** = कर्मों को **अजयत्** = जीत लेता है।

व्याख्या-यह बात सभी मानते हैं कि शरीर और इन्द्रिय आत्मा के लिए हैं। शरीर आत्मा का भोगाधिष्ठान-सुख-दुःख भोगने का ठिकाना है। इन्द्रियाँ आत्मा का कारण-हथियार हैं, अतः आत्मा इनसे श्रेष्ठ है। कठोपनिषद् [६।७-८] में इस तत्त्व का प्रतिपादन इन शब्दों में किया है-

इन्द्रियेभ्यः परं मनो मनसः सत्त्वमुत्तमम्।
सत्त्वादधि महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम्।।७।।
अव्यक्तात्तु परः पुरुषो व्यापकोऽलिंग एव च।
यज्ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं च गच्छति।।८।।

इन्द्रियों से मन श्रेष्ठ है, मन से बुद्धि = अहङ्कार उत्कृष्ट है। अहङ्कार से महत्तत्त्व, महत्तत्त्व से अव्यक्त = प्रकृति उत्कृष्ट है। अव्यक्त से पुरुष पर = उत्तम है। वह व्यापक= व्यापक सामर्थ्य वाला तथा अलिङ्ग किसी का उपादानकारण नहीं है। प्रकृति विकृति-दशा को प्राप्त हो रही है, उसके विकार उसके अनुमापक हैं, किन्तु आत्मा का इस प्रकार का कोई विकार या कार्य नहीं, अतः ऋषि ने आत्मा को अलिङ्ग कहा है। आत्मा की शक्तियाँ सारे देह में कार्य कर रही हैं, अतः उसे व्यापक कह दिया है।

इस प्रकार का उत्कृष्ट आत्मा जब सत्कर्मों के कारण कीर्ति पाता है और सर्वत्र उसका नाम सुनने को मिलता है, तब यह पर = केवल उत्कृष्ट न रहकर परम = उत्कृष्टतम हो जाता है। मन आदि देव मानो इसी कारण आत्मा से भय खाते हैं कि यह हमसे श्रेष्ठ है। हम उसके कारण ही इस देह में रहते हैं। यह यदि इस शरीर से चला गया तो हमें भी यहाँ से चलना होगा। मानो, उन्हें बेठिकाना होने का भय सता रहा है। इन इन्द्रियों में जो शक्ति है, यह भी तो आत्मा की है। आत्मा की स्तुति करती हुई इन्द्रियाँ कहती हैं-

या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि।
या च मनसि सन्तता शिवां तां कुरु मोत्क्रमीः।।

प्रश्नो० २।१२

जो तेरा विस्तार वाणी में है, जो कान में और जो आँख में है और जो मन में फैल रहा है उसे कल्याणकारी बना, इस शरीर से तू मत निकल, क्योंकि यदि आत्मा शरीर से निकल गया तो इन्द्रियाँ इसमें न रह पाएँगी। आँख, नाक आदि की अपनी कोई शक्ति नहीं है, जो है वह आत्मा की है। दूसरा कारण यह भी है कि जिस प्रकार सूर्य जल को रोकने वाले मेघों को छिन्न-भिन्न कर देता है। इससे भी मानो इन्द्रियाँ घबराती हैं कि कहीं हमारी प्रवृत्तियों का ही अवसान न हो जाए। सार यह निकला कि शरीर और इन्द्रियों की सत्ता, सामर्थ्य तभी तक है जब तक कि आत्मा शरीर में वास कर रहा है। इन्द्रियों तथा शरीर की महत्ता एवं सामर्थ्य का विचार करो तो आत्मा के गुण, सामर्थ्य समझे जा सकते हैं। ऐसे परमोत्तम आत्मा को जानना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत-कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

धर्म का वास्तविक स्वरूप

-ले० शिव नारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

धर्म शब्द का पयार्यवाची कोई भी शब्द पश्चिमी जगत् में प्राप्त नहीं है। हम सामान्यत: रिलीजन (Religion) शब्द को धर्म का पर्यायवाची शब्द मान लेते है परन्तु वास्तव में वह धर्म के लक्षणों को अपने में धारण नहीं करता है। रिलीजन (Religion) शब्द लेटिन भाषा के रिलीगरे (Reigare) शब्द से निकला है और इसका अर्थ है, मैं अपने आपको अपने ईश्वर के साथ जोडूंगां, बाधूंगा। (I shall bind my self to my God) द कानसाइड आक्सफोर्ड डिक्शनरी में कहा गया है Particulal System of Faith and Worship Things that one is Bound or Devoted to एक विशेष प्रकार के विश्वास और पूजन की व्यवस्था ऐसी चीज जिससे कोई जुड़ा हो अथवा समर्पित हो। इसी प्रकार द कोलीन्स कोबिल्ड इंग्लिश लेंग्वेज डिक्शनरी कहती है-Religion Consists of a belief in a God or Gods and the Activities that are Connected with this belief. Religion एक देवता या बहुत से देवताओं और कई कर्मकाण्डों से जुड़े हुए विश्वास में स्थित हैं। द मेरियन वेवस्टर कालेजियट शब्द के अनुसार-Religion Means that service and worship of God or the super Natural Commitment or Devotion Religious Faiths or observance a personal set for Institutionalized system of Religious attitudes beliefs and practices. रिलीजन का अर्थ है ईश्वर की सेवा और पूजा या उत्कृष्ट प्राकृतिक प्रतिज्ञा और समर्पण, धार्मिक विश्वास। निरीक्षण, एक व्यक्तिगत संस्थागत व्यवस्था भाव भंगिमा, विश्वास और अभ्यास कीथवार्ड Religion में एक पैगम्बर, पुत्र अथवा अवतार का होना आवश्यक मानता है। God भी इनके समूह के लिए ही होता है। साथ ही विशेष धार्मिक क्रियाएं (बलि आदि) करना भी आवश्यक है। उदाहरण के रूप में, 'मैं इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ।'

ईसा मसीह भी अपने को यहूदी ही मानते थे। यह न समझो कि मैं धर्म व्यवस्था या नबियों की शिक्षा को मिटाने के लिए आया हूँ। मैं उनको मिटाने को नहीं वरन् पूरा करने के लिए आया हूँ। मत्ती. 5.17. कुर्आन मजीद में भी यहूदी एवं ईसाइयों को इस्लाम के निकट माना गया है। जो लोग मुसलमान है या यहूदी या ईसाई या सितारापरस्त जो कियामत के दिन (Day of Judgement) पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा तो ऐसे लोगों को उनके आमाल का बदला खुदा के यहां मिलेगा और कियामत के दिन उनको न किसी तरह का खौफ होगा और न वे गमनाक होंगे।

सूर बकर 2 आयत 62 (पृष्ठ 13) आगे पुन: इसी विषय पर कहा है, और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेर सकता है उसके अलावा जो निहायत नादान हो। हमने उनको दुनिया में भी चुना था और आखिरत में भी नेकों में रहेंगे। सूर बकर 2 आयत 130 (पृष्ठ 27) फिर रिलीजन के नाम पर दूसरे रिलीजन के साथ ही नहीं वरन् अपने रिलीजन के दूसरे फिरको के साथ जो खून खराबा हुआ है वह तो मनुष्यता के नाम पर कलंक ही है। यही कारण है कि उन्नसवीं सदी के प्रारम्भ में बर्लिन में वैज्ञानिकों की जो कान्फ्रेन्स हुई थी उसमें एक प्रस्ताव पारित किया गया था कि अब तक मनुष्यों का मार्गदर्शन रिलीजन करता आया है परन्तु वह मनुष्यों खूनी संघर्षो में ही धकेलता रहा है इसलिए अब यह कार्य उसको विज्ञान के हाथ में छोड़कर अलग हो जाना चाहिए। इन धर्मो में धर्म की कोई उचित परिभाषा भी नहीं दी गई है। अब हम धर्म पर चर्चा करते हैं। मनुस्मृति में कहा गया है-

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित:।

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत्।

अर्थात् जो धर्म का विनाश करता है अर्थात् धर्म की मान्यताओं के विरोध में कार्य करता है धर्म उस व्यक्ति को नष्ट कर देता है और जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म भी करता है अत: हमें यह विचार कर धर्म के विरूद्ध कार्य नहीं करना है, धर्म का हनन नहीं करना है कि कहीं नष्ट किया हुआ धर्म हमारा ही नाश न कर दे।

फिर धर्म की परिभाषा करते हुए मीमांसा कथन है-

चोदना लक्षणोऽर्थो धर्म:।। मीमांसा 1.1.2

अर्थात् क्रिया में प्रेरक वचन से लक्षित होने वाला नि:श्रेयस प्रापक अर्थ धर्म है। सामान्य रूप से इसका अर्थ हुआ कि श्रेष्ठ पुरुष हमें मोक्ष की प्राप्ति को ध्यान में रखकर जिन कर्मो को करने के लिए प्रेरित करें वह धर्म है। फिर मीमांसा दर्शन में धर्म को ठीक से समझने का ही प्रयत्न हुआ है। मनुस्मृति में धर्म की परिभाषा निम्न है-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

प्रियं चानृतं ब्रूयात् एष धर्म सनातन।

सदैव सत्य बोले, प्रिय बोले, अप्रिय लगने वाला सत्य न बोले, प्रिय लगने वाला असत्य भी न बोले यही सनातन धर्म है। वैशेषिक दर्शन में धर्म की परिभाषा-**यतोभ्युदय नि:श्रेयस सिद्धि: स धर्म:।। वैशेषिक दर्शन 1.1.1.2** अर्थात् कर्मो का वह समुच्चय जिससे द्वारा हम इस संसार में विकास के सर्वोच्च बिन्दु पर पहुंच जायें और साथ मोक्ष भी प्राप्त कर लेवें धर्म कहलाता है।

जैन धर्म में धर्म की परिभाषा है-वस्तु स्वभावो धम्मो अर्थात् किसी वस्तु का जो स्वभाव है वही उसका धर्म है। फिर धर्म के लक्षण बताते हुए कहा गया है- **वेद: स्मृति: सदाचार, स्वस्य च प्रियमात्मन:। एतत् चतुर्विध प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।** हमारे कार्य वेद, स्मृति की शिक्षा के अनुकूल हो। सदाचार के अनुकूल हों और अपनी आत्मा को भी प्रिय लगने वाले हों। इन चार प्रकार कार्य विधि के लिए कहा जाता है कि यह धर्म का साक्षात् लक्षण है। परन्तु यह हो सकता है कि वेद और स्मृति ग्रन्थों के प्रमाण न मानने वाले लोग इसको अस्वीकार कर दें तो उनके लिए मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण अलग से बता दिए हैं।

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रह:।

धी र्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

अर्थात् (धृति) धैर्य (क्षमा) अपने प्रति किये गए सामान्य अपराध पर दण्ड न देना, (दम) अपनी चित्त वृत्तियों का दमन करना (अस्तेय) मन, वचन और कर्म से अचौर्य की भावना रखना, किसी की भी वस्तु को बिना उसके स्वामी की आज्ञा के ग्रहण नहीं करना (शौचम्) मन, वचन और कर्म में पवित्रता धारण करना, शरीर, मन, चित्त और बुद्धि को पवित्र बनाए रखना, (इन्द्रिय निग्रह) अपनी पांचों ज्ञानेन्द्रियों और पांचों कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना उनको सदाचार के विरूद्ध दिशा में जाने से रोकना (धी) श्रेष्ठ बुद्धि और (विद्या) ज्ञान का विकास करना (सत्यम्) मन, वचन और कर्म में सत्य को धारण करना (अक्रोध) क्रोध पर नियन्त्रण रखना ये लक्षण पाया जाएं वही धार्मिक पुरूष है। धर्म के इससे अच्छे लक्षण दूसरी किसी भी जगह पर प्राप्त नहीं है। फिर वैदिक वाङ्मय में धर्म की भावना का भी जैसा वर्णन हुआ है वैसा श्रेष्ठ वर्णन अन्यत्र कहीं भी वर्णित नहीं है। कहा गया है-

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:ख भाग भवेत।।

अर्थात् संसार में सभी प्राणी सुखी रहें, सभी प्राणी निरोग रहें, सभी प्राणी एक दूसरे को भद्र दृष्टि से देखें और संसार में कोई भी दु:खी न रहे। फिर धर्म की नींव होता है दर्शन। भारत में वैदिक वाङ्मय में षट् दर्शनों के रूप में दर्शन शास्त्र का जैसा विकास हुआ है वैसा अन्यत्र कहीं भी देखने में नहीं आता है। अभी कुछ सौ वर्ष पूर्व पश्चिम में दर्शन में कार्य होने लगा है परन्तु उसका तालमेल उनके धर्म के मूल ग्रन्थों से नहीं बैठ रहा है।

वैदिक वाङ्मय में दर्शन की परिभाषा देते हुए कहा गया है- 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्। जिसके द्वारा यथार्थ रूप से देखा जा सके अथवा वस्तु का तात्विक स्वरूप समझा जा सके उसे दर्शन कहते हैं। दर्शन के प्रतिपाद्य विषय होते हैं-हेय, हेय हेतु, हान और हान हेतु। दु:ख का वास्तविक स्वरूप क्या है जो 'हेय' त्याज्य है। दु:ख का वास्तविक कारण क्या है जो 'हेय हेतु' अथवा त्याज्य का हेतु है। दु:ख का अत्यन्त अभाव क्या

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

वेदों के अनुसार चार वर्ण और चार आश्रम

वेदों के अनुसार समाज और राष्ट्र को सुसंगत और सुव्यवस्थित करने के लिए मनुष्यों को गुण, कर्म, स्वभाव भेद से चार प्रकार के कार्यों जिन्हें वर्ण कहा गया है, उन चारों में से किसी एक को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। ये चार प्रकार के वर्ण हैं-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ये चार वर्ण जन्म से नहीं, किन्तु कर्म की प्रधानता के लिए माने गए हैं। कर्म की व्यवस्था मनुष्य की योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार निर्धारित की गई है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता है कि किस वर्ण को पसन्द करता है और उसको क्या वह अच्छी प्रकार से निर्वाह कर सकेगा? परन्तु खेद है कि मध्य काल में जब से यह जन्ममूलक वर्ण-व्यवस्था आरम्भ हुई है, तब से समाज में अनेक विकृत्तियाँ, जैसे पारस्परिक भेद-भाव, ऊँच-नीच का भाव, छुआ-छूत का भेद, घृणा, विद्वेष, संघर्ष आदि ने जन्म लिया और एक आर्य जाति में फूट प्रारम्भ हो गई। परिणामस्वरूप उससे टूटकर अनेक तथाकथित जन्ममूलक वर्ण के लोग विधर्मी हो गए और इस्लाम या ईसाई मत ग्रहण कर मुसलमान या ईसाई बन गए। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारा विशाल देश भारत हजारों वर्षों तक विदेशियों के शासन कुचक्र में दासता का जीवन जीने के लिए मजबूर हो गया। सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारतवर्ष विनाश और पतन के कगार पर खड़ा होकर अनेक टुकडों में बंट गया। जिस देश की गौरव गाथा चारों दिशाओं में गुंजायमान थी, वही विदेशियों का गुलाम हो गया। इन अत्याचारों के परिणामस्वरूप ईश्वरकृपा से देश में नवजागरण काल का उदय हुआ और उसमें अगणित बलिदानियों के त्याग से भौगोलिक दृष्टि से खण्डित भारत स्वतन्त्र हुआ परन्तु अब भी जन्ममूलक इस वर्ण-व्यवस्था का विघटनकारी रोग समाप्त नहीं हुआ है। यद्यपि अनेक महापुरूषों ने इस रोग को दूर करने का प्रयास किया तथापि यह समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। इसका निराकरण तो तभी सम्भव है, जबकि व्यक्ति की रूचि, गुण, कर्म की योग्यता और श्रेष्ठ धार्मिक विद्वानों एवं गुरूकुलों के आचार्यों की सहमति तथा संस्तुति के आधार पर वर्ण का निर्धारण हो। **नान्यः पन्था विद्यते अयनाय** यही वैदिक व्यवस्था है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था विज्ञानयुक्त, स्वाभाविक और पारस्परिक भेदभाव से रहित है, जैसा कि वेद में कहा गया है-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।

यह मन्त्र ऋग्वेद और यजुर्वेद के पुरूष सूक्त का मन्त्र है। इसमें समाज के चार प्रमुख अंगों की मनुष्य शरीर के अंगों से उपमा दी गई है। जैसे मनुष्य शरीर में सब से उच्च और प्रधान अंग मुख अर्थात् शिर या मस्तिष्क ज्ञान का भण्ड़ार है, उसी प्रकार समाज में सिर के समान ज्ञान प्रधान मनुष्य या मनुष्य समुदाय ब्राह्मण नाम के वर्ण से सम्बोधित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार शरीर में दोनों भुजाएं जैसे बल प्रधान होने पर रक्षा करने योग्य की रक्षा करने और दण्डित करने योग्य को दण्डित करने में समर्थ मानी जाती हैं, उसी प्रकार समाज में सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए और शासन के विधि-नियमों के अनुसार सेना, पुलिस और पक्षपात रहित न्याय के द्वारा प्रशासन करने वाला द्वितीय वर्ण क्षत्रिय नाम से सम्बोधित किए जाने योग्य है। तीसरा शरीर का मध्य भाग जैसे उदर, खाए हुए अन्न को रस, रक्त, मांस, अस्थि इत्यादि सात प्रकार के धातुओं में विभक्त करने का कार्य करता है, उसी प्रकार समाज का तीसरा अंग वाणिज्य-व्यापार प्रधान होने से वैश्य कहा जाता है। वैश्य के कर्त्तव्य कर्मों में कृषि तथा गाय, घोड़ा, बकरी, भेड़ आदि पशुओं का पालन भी समाविष्ट है। शरीर का चतुर्थ अंग पैर है, जो शरीर के तीनों अंगों - शिर, भुजाऐं और उदर-कमर जंघा आदि को थामे रहता है, तथा चलने का कार्य करता है। उसी प्रकार समाज में जो लोग न ज्ञान और विशेष बुद्धि का कार्य कर सकते है, न बल सम्बन्धी कार्य कर सकते हैं और न वाणिज्य व्यापार अथवा कृषि गोपालन का कार्य ही कर सकते हैं। वे उक्त तीनों वर्णों की सेवा और शारीरिक परिश्रम का कार्य करने के कारण शूद्र वर्ण के नाम से सम्बोधित किए गए हैं। इन चारों वर्णों के गुण, कर्मों का विस्तृत विधान वेदादि साहित्य से लेकर मनुस्मृति, धर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों, भगवद्गीता आदि में देखा जा सकता है।

ये चारों वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण हैं, जाति नहीं। वर्ण का अर्थ है वरण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य। कार्यविशेष को करने की प्रबल इच्छा और उसके लिए योग्यता का होना वर्ण अपनाने का हेतु माना गया है। जैसे शरीर के चारों अंग आपस में मिलजुल कर एक होकर कार्य करते हैं, और पूरे शरीर को सुख पहुँचाते हैं, उसी प्रकार समाज के ये चारों वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आपस में मिलजुल कर सम्पूर्ण समाज में एकता बनाए रखते हुए समाज को सुखी और प्रसन्न करते हैं। मनुष्य रूप में एक समान होने और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के परस्पर के कार्यों में कुछ-कुछ भेद होने पर भी परस्पर संघर्ष नहीं होना चाहिए। यह वर्णव्यस्था वैदिक पद्धति पर आधारित होने के कारण शुद्ध है। शूद्र वर्ण का व्यक्ति अगर अपने अन्दर योग्यता पैदा कर लेता है तो वह अपना वर्ण परिवर्तन करके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कहलाने का अधिकारी हो जाता है। इसलिए यह वर्ण व्यवस्था जन्मना नहीं कर्मणा आधारित है। यदि ब्राह्मण वर्ण के व्यक्ति का बालक अपने अन्दर विद्या के द्वारा योग्यता को प्राप्त नहीं करता है तो वह भी शूद्र कहला सकता है। इसी प्रकार वैदिक वर्ण व्यवस्था में जिस -जिस वर्ण की योग्यता व्यक्ति के अन्दर होती है वह उसी वर्ण के अनुसार कहलाने का अधिकारी है। कोई भी वर्ण अपने कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बन सकता है। इन तीनों कर्मों से हीन व्यक्ति शूद्र है।

वैदिक धर्म में चार वर्णों के साथ-साथ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास नामक चार आश्रमों का विधान भी वेद सम्मत है। सौ वर्ष की औसत आयु को पच्चीस-पच्चीस वर्षों में विभाजित करके इस आश्रम व्यवस्था को अपनाने का निर्देश है। इनमें गृहस्थाश्रम को छोडकर अन्य तीन आश्रमों में ब्रह्मचर्य आश्रम जो मुख्यतः वेद विद्याध्ययन और यम-नियमादि योग के अंगों को दृढ़ता से पालन करने की शिक्षा ही मुख्य है, जो एक स्वस्थ नीरोग और दीर्घ जीवन के साथ-साथ परमार्थ की सिद्धि का मूल माना गया है। गृहस्थाश्रम में युवावस्था में स्त्री पुरूष का विवाह, धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति, उनका पालन, शिक्षा दीक्षा, दया दानादि अनेक शुभ कर्मों को करने का शास्त्रों में विधान है। गृहस्थ के पश्चात वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम में स्वाध्याय करते हुए, वेदाध्ययन करते हुए, त्याग और तपस्या की जीवन बिताते हुए समाज का उपकार करने का शास्त्रों में वर्णन किया गया है।

जब तक समाज में कर्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था और आश्रम-व्यवस्था का प्रचलन था तब तक समाज इस जातिवाद के जहर से कोसों दूर था। भारतवर्ष के पतन का कारण अनेक जातियों में विभक्त हो जाना था। वर्तमान में भी अगर राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाना है तो इस जातिवाद को खत्म करना होगा। राजनीतिक दल चुनावों में वोट प्राप्त करने के लिए जाति के आधार पर लोगों को बांटने का कार्य करते हैं जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र उन्नति के स्थान पर अवनति की ओर अग्रसर हो जाता है। इसीलिए आज आवश्यकता है कि वेद आधारित वर्ण-व्यवस्था के अनुसार समाज को उन्नत एवं खुशहाल बनाएं और इस जातिवाद के भंयकर जहर से राष्ट्र को बचाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

वेदों में मानव मनः शक्ति एवं परमात्मा की प्राप्ति

-ले०मृदुला अग्रवाल, 19 सी सरत बोस रोड कोलकाता

विश्व में मानव ही ऐसा प्राणी है जिसको परमात्मा ने विवेकपूर्ण मस्तिष्क एवं 'मन' को संयत करने की बुद्धि प्रदान की है। केवल मानव ही अपनी बुद्धि के सहारे अपने मनोवेगों पर अंकुश लगाकर 'मन' की संयमित, संतुलित शक्ति को भावात्मक स्तर से ऊपर उठाकर 'परमानन्द' प्राप्त कर सकता है। अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-११, मन्त्र-५ के अनुसार परमात्मा ने सूर्यादि के सदृश प्रकाशमान, तेजः स्वरूप स्वर्ग (सुखधाम) देकर मानव के 'मन' को शक्तिशाली बनाया। वैदिक-काल में मन-इन्द्रियों को रोककर आत्म-साक्षात्कार करने की दार्शनिक क्रिया का बड़ा महत्व था। इसीलिये प्राचीन ऋषियों ने मानव को सर्वोत्तम प्राणी घोषित किया था। मानव प्राणी ही आध्यात्मिक एवं नैतिक आचरण को अनायास ही अपने जीवन में लाकर पूर्णता की ओर स्वयं को विकसित कर सकता है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति, दृढ़ संकल्प, वैराग्य, धैर्य, संतोष, आत्म-संयम, शान्त-भाव, मन का निग्रह, मन की प्रसन्नता, अन्तः करण की पवित्रता, भगवत् मनन-चिन्तन करने का स्वभाव-ये सब मन-सम्बन्धी तप कहलाते हैं एवं ये सब सुविकसित मन की विचारधारा ही तो है। अनुशासन द्वारा लायी गयी ऐसी ''मनः शक्ति'' एवं शान्ति ही ''शम'' का तात्पर्य है। भक्ति में भी यही तो होता है कि भक्त अपने प्रियतम परमात्मा के ध्यान में मग्न हो जाता है और सांसारिक चेष्टाएँ खुद-ब-खुद छूट जाती हैं। ज्यों-ज्यों हम 'मन' को संयमित करने में सफल होंगें, मन सांसारिक विषयों से हटता जायेगा। 'सन्मार्ग में लगे हुए मन को जो मनुष्य सतावे, उसे परमेश्वर सब तरह से कठिन फांस में बंधा हुआ जीवन देता है।'-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-१२, मन्त्र-2।। 'मन' विचार-प्रवाह है। मन के सन्मुख कोई ऊँचा, महान् विचार या लक्ष्य हो तो वह सांसारिक क्षेत्रों में विचरण नहीं करेगा। सर्वव्यापी चैतन्य ब्रह्म के चिन्तन में जब 'मन' ध्यानस्थ होता है तभी सफलतापूर्वक विषयों से विश्क्त हो पाता है। जब मन संसार के विषयों से विरक्त होकर अन्तर्मुखी होता है, तभी वह गुणातीत होकर परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास करती है। अपनी इन्द्रियों एवं चित्तवृत्तियों को संयम में रखकर जो अविचल रहता है वह जीवात्मा सदैव कीर्ति को प्राप्त करता है। शुभ और अशुभ विचार मन में ही आते हैं। 'विचार' जो आत्मा और मन को प्रफुल्लित करते हैं, जैसे नदियाँ किनारों को तोड़कर मैदान में प्रवाहित होती हैं, वैसे ही मन बुरे विचारों को छोड़कर अच्छे विचारों को प्रवाहित करता है-ऋग्वेद, काण्ड-१

वेद कहते हैं कि मानव-जीवन आनन्दमय है। अच्छे विचारों से स्वयं ही जीवन में आनन्दता आती है। मन की तरंग और चित्त की प्रवृत्तियों को पहचानकर 'मन' को पवित्र किया जा सकता है। पवित्र मन ही सबसे बड़ा तीर्थ है। ''मन चंगा तो कटौती में गंगा''-रैदास के निर्मल हृदय से भक्ति के ये दो शब्द अनायास ही निकल पड़े। 'मन' जिनका सुन्दर है उस घर में परमात्मा का वास होता है।

''परमात्मा कल्याण द्वारा मन की बुराइयों के छिद्र भर देवें''-यजुर्वेद, ३६/2

''निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।'' रामायण।।

जो मानव निर्मल मन का होता है वही परमात्मा को पाता है। शुद्ध अन्तःकरण को परमात्मा को अर्पित करना ही ''अनासक्त योग'' कहलाता है। ''मन'' समूहवाची है। 'मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार' ये चारों अन्तःकरणों को मन स्वयं में समेटकर रखता है। योगी पुरुष के अन्तःकरण की वृत्तियां ही उसे परमज्योति परमात्मा को प्राप्त करने में समर्थ होती हैं। अन्तःकरण से उद्भावित परमात्मा ही उपासक पर नये-नये अनुग्रहों को बरसाता है। हे परमात्मा ! आप मन के वेग से भी शीघ्रगामी हैं अर्थात् मन के पहुँचने से पहले ही सर्वस्व विद्यमान रहते हैं। वेद में परमात्मा के गुणकीर्तन से मन समाहित हो कुटिलताओं से लोहा लेने के लिए ऐसा कठोर हो जाता है जैसा कि वज्र। समाहित मन बलवान् व अडिग बन जाता है। यम-नियम इत्यादि योग के साधनों से समाहित मन से शरीर की प्रत्येक नाड़ी में वीर्य का आधान होता है, वीर पुरुष इसी तरह बलवान् होते हैं। प्राण-अपान की गति को नियन्त्रित कर, एकाग्रता के अभ्यास से मन को दुर्भावनाओं के घेराव किये जाने से बचाना अनिवार्य है। सद्भावनाओं से ओत-प्रोत मनः शक्ति अमर प्रतीत होती है। यही उसका वास्तविक स्वरूप है।

''मनोजवा अयमान आयसी-मतरत्युरम्।
दिवं सुपर्णो गत्वाय सोमं वज्रिण आभरत्।।''

-ऋग्वेद, मंडल-८, सूक्त-१००, मन्त्र-८।।

पदार्थ-''मन के तुल्य वेगवान, आगे बढ़ता हुआ शुभगति युक्त लोहे के जैसे अति कठोर तत्वों से बनी इस पुरी (मानव-शरीर) को पार कर जाता है। पुनश्च दिव्यता को प्राप्त हो वह वीर्यवान् इन्द्र हेतु दिव्य सुख को लाता है।''

भावार्थ-'मानव-शरीर को 'पुरी' कहा गया है। 'आयसी' दुष्प्रवेश्य है। यह पुरी 'चेतन-तत्त्व' आत्मा का निवास-स्थान है। इसमें प्रवेश का तात्पर्य है भली-भांति समझना। इसको समझकर ही जीवात्मा परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है। 'सुपर्ण' का एक अर्थ ज्ञानवान् है। ज्ञानवान् चेतन साधक इस पुरी को भली-भांति जानकर दिव्यता पाकर जीवात्मा को दिव्य सुख प्रदान करता है। शुद्ध मन से अधर्म को त्याग धर्म के आचरण करने की अत्यन्त प्रशंसा हुई है। धर्मानुकूल आचरण करने से आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह मन की शान्ति का प्रतीक है। जो पुरुष कार्मिक, वाचिक और मानस तीनों प्रकार के शुद्धभाव से ओत-प्रोत तथा सत्यवादी रहते हैं उनके सामने कोई असत्यवादी ठहर नहीं सकता। वे ही माननीय एवं महात्मा होते हैं। केनोपनिषद के अनुसार 'मन' सत्य की ओर आकर्षित अवश्य होता है, परन्तु जब तक मन में नाना प्रकार के विकार भरे पड़े हों, तब तक उसे सत्य की ओर ले जाना असम्भव हो जाता है। वैसे मन को सत्य की ओर ले जाना आज के वैज्ञानिक ढंग से इलैक्ट्रोन और प्रोटोन (परमाणु एवं सूक्ष्माणु) है। इलैक्ट्रोन 'मन' है क्योंकि वह गतिशील है, प्रोटोन 'सत्य' है क्योंकि वह स्थायी है। मन में नकारात्मक एवं सत्य में सकारात्मक शक्तियां हैं। प्रोटोन (सत्य) के चारों ओर इलैक्ट्रोन (मन) घूमता है। ऋत अर्थात् सत्य व सृष्टि का आदि तत्व प्रोटोन है। प्रोटीन इलैक्ट्रोन को चुम्बकीय शक्ति से आकर्षित करता है। वेद में ''ऋतं च सत्यं चाभीद्धात-पसोऽध्यजायत''-ऋग्वेद, मण्डल-१०, सूक्त १६०, मन्त्र-१- में सृष्टि की उत्पत्ति बताई है। तात्पर्य यह है कि मन की गति तथा चेष्टाएँ असीम हैं, जिसे परमात्मा ही पूरा कर सकता है। 'मन' ही मानव के सभी दोषों को दूर करते हुए सदा गतिमान रहता है और मस्त हाथी के समान किसी के आधीन नहीं रहता। मन को अपनी सच्चाई पर सदा दृढ़ रहना चाहिए। मन स्वप्न और जाग्रत अवस्था में किसी भी समय तीव्र गति से दूर-दूर तक पहुँच जाता है। जो इच्छाएँ, कामनाएँ अपने विवेक-बुद्धि-विचार आदि की वजह से जाग्रत अवस्था में मनुष्य पूर्ण नहीं कर पाता, उन्हें नींद में सोते समय स्वप्नावस्था में, लोक-लज्जा की अनुपस्थिति में, मन द्वारा दुराचरण, कुकर्म आदि के रूप में, तीव्रगति से कर बैठता है। यह तो मन की चंचल वृत्ति हुई। ज्ञान-पथ के साधकों का प्रारम्भिक लक्ष्य मन को स्थिर एवं एकाग्र करना होता है। स्थिर मनः शक्ति को समाधान भी कहा जाता है। स्थिर मन से परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है-चंचल मन से नहीं। मन के संकल्प शिव और अशिव दोनों होते हैं। मन द्वारा शिव तत्व में लीन हो जाना ही मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। शिव अर्थात् कल्याणकारी-''तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु''-यजुर्वेद में ३४वें अध्याय के १ से ६ तक के मन्त्र इसके प्रतीक भी हैं। भोगों से ग्लानि ही मुक्ति की राह होती है। यह सब मन के द्वारा ही सम्भव है। मन ही मोक्ष और बन्धन का कारण है।

''जितं जगत् केन, मनो येन,'' जो मन पर संयम कर लेता है, वह संसार में सदा विजयी होता है। ''हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें, दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें''।

(क्रमशः)

पर्यावरण संरक्षण यज्ञ

-ले० पं० वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

(गतांक से आगे)

अर्थात् स्थान और तेज हैं अर्थात् सैकड़ों स्थानों पर ये ओषधियां उत्पन्न होती हैं। इनके तेज़ और शक्तियां भी पृथक्-पृथक् हैं। हे ओषधियो ! तुम्हारी प्रभाव शक्तियां भी अनन्त प्रकार की हैं अर्थात् प्रभाव में भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं। सैकड़ों कर्मों अर्थात् प्रभावों को दिखाने वाली हे ओषधियो ! तुम मेरे इस रोगी को रोग रहित कर दो।

ओ३म् ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वा इव सजित्वरीः वीरुधः पारयिष्णव :।। यजु. 12/77

जिस प्रकार संग्राम में घोड़े विजय करने वाले होते हैं वैसे ही ये औषधियां विविध रोगों को रोकने वाली हैं। साथ ही ये रोग रूप विघ्नों से पार ले जाने वाली हैं।

ओ३म् ओषधीरिति मातरः तद्वो देवीरूप ब्रुवे स्वाहा।। यजु. 12/78

ये ओषधियां मातृरूप हैं अर्थात् माता के समान कल्याण करने वाली हैं। अतः इन्हें दिव्य गुणों वाली कहता हूँ।

ओ३म् याः फलिनीर् या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास् ता नो मुञ्चन्तु अंहसः स्वाहा।। यजु. 12/89

ओषधियों के रूप की भिन्नता का वर्णन करते हुए कहते हैं-

जो ओषधियां फल वाली हैं अर्थात् जिन पर फल आते हैं, जो फल रहित हैं अर्थात् जिन पर फल नहीं आते। जो फूलों से रहित हैं अर्थात् जिन पर फूल नहीं लगते। केवल फल लगते हैं। यथा-उदुम्बर (गूलर), फल-फूल से रहित गिलोय और जो फूलों वाली हैं अर्थात् कुछ में फूल आने के पश्चात् फल लगते हैं। किसी में फूल ही होते हैं, फल नहीं होते।

ओ३म् मा ओषधीः हिंसीः स्वाहा।। यजु. 6/22

हे मनुष्यो ! ओषधियों की हिंसा मत करो।

ओ३म् सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु।। यजु. 6/22

जल और ओषधियां हमारी मित्र हैं।

ओ३म् ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पवतीः सुपिप्पलाः स्वाहा।। यजु. 11/48

उत्तम पुष्पों वाली, उत्तम फलों वाली ओषधियां ग्रहण करो।

ओ३म् शान्ताः नः सन्तु ओषधीः स्वाहा।। अथर्व. 19.9.11

ये ओषधियां हमारे लिए शान्तिकारक सिद्ध हों।

ओ३म् आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन स्वाहा।। यजु. 11/50

यह जल निश्चय ही रोगनाशक और कल्याणकारक है।

अतः हमें बल और प्राणशक्ति धारण कराएं।

ओ३म् आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत स्वाहा।। यजु. 12/35

दिव्यगुणयुक्त जल सदैव ग्रहण करो।

मनुष्य एवं जीवजन्तु संरक्षण-

आज मनुष्य एवं अन्य जीव-जन्तुओं का जीवन प्रदूषण के कारण खतरे में है। हमें इसका निदान अवश्य खोजना चाहिए। वेद कहता है-

ओ३म् द्विपाच् चतुष्पाद् अस्माकं सर्वमस्तु अनासुरं स्वाहा।। यजु. 12/95

हमारे दोपाए अर्थात् मनुष्यादि और चौपाए अर्थात् गौ आदि पशु सभी नीरोग हों।

ओ३म् द्विपादव चतुष्पात् पाहि स्वाहा।। यजु. 14/8

दोपाए-मनुष्यादि और चौपाए-गौ आदि पशुओं की रक्षा करो।

ओ३म् मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः स्वाहा।। यजु. 16/16

हमारी गौओं के प्रति, हमारे घोड़ों के प्रति हिंसित मत हों।

ओ३म् परिप्लवेभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/29

जलों में चतुर्दिक् तैरने वाले प्राणियों की अनुकूलता के लिए यह आहुति कल्याणकारक हो।

ओ३म् चराचरेभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/29

चर अर्थात् विचरणशील प्राणियों के लिए तथा अचर अर्थात् वृक्षादि कों के लिए यह आहुति हम सभी प्रदान करते हैं।

ओ३म् सरीसृपेभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/29

रेंगने वाले अर्थात् चींटी, कीड़े-मकोड़े, सर्प आदि प्राणियों की अनुकूलता के लिए यह आहुति समर्पित है।

ओ३म् वनानां पतये नमः स्वाहा।। यजु. 16/18

वनों की रक्षा करने वाले अथवा वनों के स्वामी लोगों के कल्यार्थ हम यह आहुति दे रहे हैं।

ओ३म् वृक्षाणां पतये नमः स्वाहा।। यजु. 16/19

आम्रादि वृक्षों के अधिष्ठाता के सम्मानार्थ यह आहुति है।

ओ३म् ओषधीनां पतये नमः स्वाहा।। यजु. 16/19

ओषधियों के रक्षक अथवा चिकित्सकों के लिए यह आहुति समर्पित है।

ओ३म् अरण्यानां पतये नमः स्वाहा।। यजु. 16/20

अरण्यों अर्थात् वनों के रक्षक अथवा स्वामियों के हितार्थ यह आहुति समर्पित है।

ओ३म् पृथिवी देवयजनि ओषध्याः ते मूलं मा हिंसिषं स्वाहा।। यजु. 1/25

देवताओं के यज्ञ करने की आधारभूत हे पृथिवी ! तेरी इन औषधियों के मूल अर्थात् जड़ को कभी हिंसित मत करें।

वायु शुद्धि संरक्षण-

ओ३म् वाताय स्वाहा।। यजु. 22/26

वायु शुद्धि के लिए यह आहुति अत्यन्त श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

ओ३म् धूमाय स्वाहा।। यजु. 22/26

अग्नि में प्रदान की गई आहुतियों से उत्पन्न धुएं के लिए यह यज्ञ हो रहा है।

हवि द्रव्य के सूक्ष्मकण धुएं के रूप में ऊपर उठकर जलवाष्प से मिलकर अभ्र और मेघ रूप में परिवर्तित हो जाते हैं और वर्षा में सहायक होते हैं। जो वायु को शुद्ध करते हैं। अतः यज्ञ वायु की शुद्धि और वर्षा का मुख्य कारण है।

भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।3/14

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है और वृष्टि यज्ञ से होती है यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है।

ओ३म् पातु वातो अन्तरिक्षात् स्वाहा।। ऋ. 10/158/1

अन्तरिक्ष के विकारों से वायु हमारी रक्षा करे।

ओ३म् त्रायतां मरुतां गणः स्वाहा।। ऋ. 10/137/5

मरुद्गण अर्थात् वायुदेव हमारी रक्षा करें।

वस्तुतः वायु को देवता कहा गया है-वातो देवता।

ओ३म् शन्नोवातः पवतां स्वाहा।। यजु. 36/10

वायु हमारे लिए कल्याणकारी होकर बहे।

ओ३म् शं न इषिरो अभिवातु वातः स्वाहा।। ऋ. 7.35.9

वायु हमारे लिए शान्तिदायक हो।

भूमि संरक्षण-

ओ३म् यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।

मा ते मर्म विमृग्वरि माते हृदयमर्पिपम् स्वाहा।। अथर्व। 12.1.35

हे भूमे ! तेरा जो भी भाग मैं खोदूं, वह पुनः शीघ्र ही उग आवे अर्थात् भर जाए। हे खोजने योग्य भूमि ! मैं न तो मर्म स्थल पर चोट करुं और न तेरे हृदय को पीड़ित करुं।

ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूता। दीर्घं न आयुः प्रति बुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम स्वाहा।। अथर्व. 12.1.62

हे पृथिवि ! तेरी गोद हमारे लिए नीरोग और राजरोग (टी.बी.) रहित हो। अपनी आयु को दीर्घकाल तक जागृत करते हुए हम तेरे लिए बलिदान करने वाले बनें रहें।

ओ३म् मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः।

द्विपाच् चतुष्पाद् अस्माकं सर्वमस्तु अनातुरं स्वाहा।। यजु. 12/95

हे ओषधियो ! आपका खोदने वाला मत हिसिंत है अर्थात् खुदाई के समय किसी प्रकार की चोट न आए अथवा खोदने वाला आपको हिंसित न करे अर्थात् तुम्हें जड़ से ही न उखाड़ दे अथवा काट दे। जिसके लिए मैं तुम्हें खोदता हूँ, वह हमारे दोपाए मनुष्य आदि और चौपाए गौ आदि पशु सभी नीरोग हों।

(क्रमशः)

ईश्वर अस्तित्व का प्रमाण—सृष्टि रचना

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

प्रश्न 7. ईश्वर ने अदन में बाड़ी बना कर, आदम और हव्वा को उसमें रखा। एक वृक्ष के फल खाने से यह कह कर मना किया कि इसके फल खाने से तुम लोग मर जाओगे। शैतान ने उन्हें बता दिया कि फल खाकर तुम ईश्वर के समान ज्ञानवान हो जाओगे और मरोगे नहीं। उन दोनों ने वर्जित वृक्ष के फल खा लिए। आदम द्वारा ईश्वर की भी आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण, आदम की सन्तान यानी सभी मनुष्यों को आज भी ईसाई धर्म में पापी (अपराधी) माना जाता है।

प्रश्न सूर्य के अधियारा हो जाने का उल्लेख है।

चांद अपनी ज्योति न देगा। तारे आकाश से गिर पड़ेंगे।

प्रश्न वायु के प्रकोप से आकाश के तारे पृथिवी पर गिर पड़े। और आकाश जो पत्र की तरह लपेटा जाता है, अलग हो गया।

प्रश्न लाल अजगर की पूंछ ने, आकाश के तारों के एक तिहाई को, खींच कर पृथिवी पर डाला।

जिसके सम्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गए और उनके लिये जगह न मिली।

ईसाईमत में पृथिवी को ब्रह्माण्ड का केन्द्र माना जाता है। ईस्वी सन् 1564 में कोपर निकास ने स्थापित किया कि सूर्य ब्रह्माण्ड (सौरमण्डल) का केन्द्र है, पृथ्वी नहीं। अन्य ग्रहों की तरह पृथिवी भी सूर्य की परिक्रमा करती है। गैलीलियो ने कोपर निकास की स्थापना का समर्थन किया। सन् 1616 में सूर्य की स्थिरता और पृथ्वी के घूमने का सिद्धान्त घोषित किया। दो दिन बाद ही उन्हें चर्च के अधिकारियों के समक्ष उपस्थित होना पड़ा। उन्हें सरकारी तौर पर चेतावनी दी गई कि उस विचार का प्रचार बन्द करें। स्वयं कट्टर कैथालिक होने के कारण गैलीलियों ने 1630 यानी 14 वर्ष तक कोई सार्वजनिक वक्तव्य नहीं दिया। फिर उन्होंने एक पुस्तक Dialogue concerning two systems of the worbe प्रकाशित की। 70 वर्षीय इस वृद्ध वैज्ञानिक को न्यायालय में उपस्थित होना पड़ा। उन पर दबाव डाला गया कि वह अपने कथनो को झूठा मान लें तो उन्हें माफ किया जा सकता है। गैलीलियो ने इन्कार कर दिया और अपनी बात पर डटे रहे। उन्हें जेल की सज़ा हो गई। सन् 1637 में वह अन्धे हो गए। 8 जनवरी 1642 को जेल में ही उनका देहावसान हो गया।

कैथालिक धर्म के सर्वोच्च अधिकारी पोप ने 350 वर्ष बाद, 1990 में गैलीलियों के सम्बन्ध में की गई भूल को स्वीकार किया।

महर्षि दयानन्द ईसा मसीह द्वारा किए गए चमत्कारों का खोखलापन-असत्यता बताने के लिए लिखते हैं-जैसा आजकल यूरोप देश उन्नति युक्त वैसा पूर्व (ईसा के समय) होता तो ईसा की सिद्धाई (सिद्धि-चमत्कार मृत का जी उठना, स्पर्श से कोढ़ का ठीक होना आदि), कुछ भी नहीं चलती। अब कुछ विद्या हुए भी व्यवहार के पेच और 'हठ' से इसपोल मत को न छोड़ कर, सर्वदा सत्य वेदमार्ग की ओर नहीं झुकते, यही इनमें 'न्यूनत्ता' है।

महर्षि दयानन्द ने ईसाई मत छोड़कर वेदमत स्वीकार न करने के जो कारण दिए हैं, वह वर्तमान में भी प्रांसगिक है, इसलिये थोड़ा, विस्तार-स्पष्टीकरण अपेक्षित है। पहिला कारण 'व्यवहार का पेच से मैं यही समझा हूं कि जो मान्यताएं जो विचार ईसामसीह के जमाने से चले आ रहे हैं, उनमें संशोधन परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। जैसा लिखा है, वैसा ही चलने देना चाहिए।'हठ'-दुराग्रह भी यही है कि वैज्ञानिक रूप से असत्य सिद्ध होने के बावजूद भी जो लिखा है, वही सत्य है और मान्य भी होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द तेरहवें सम्मुलास का समापन इन शब्दों में करते हैं-अब कहां तक लिखें। इनकी बाईबल में लाखों बातें खण्डनीय है। यह तो थोड़ा सा, चिन्ह मात्र, ईसाईयो की बाइबिल पुस्तक का दिखलाया है। इतने ही से बुद्धिमान लोग बहुत समझ लेंगे। थोड़ी सी बातों को छोड़कर, शेष सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता वैसे ही बाईबल पुस्तक मान्य नहीं हो सकती।

महर्षि दयानन्द के चौदहवें सम्मुलास में, इस्लाम मत की समीक्षा 161 प्रश्नोत्तर के रूप में लिखी है। इनमें से 18 प्रश्नोत्तर सृष्टि रचना के सम्बन्ध में हैं-7, 28, 42, 72, 90, 99, 112, 118, 122, 125, 138, 147, 149, 151, 154, 155, 156.

इन प्रश्नोत्तर का सारांक्ष निम्न प्रकार से प्रकट किया जा सकता है-

सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में दो कथन है-खुदा ने कहा हो जा और सृष्टि रचना हो गई (28), और खुदा ने छै दिन में, आसमानों को और पृथ्वी को बनाया। और सातवें दिन अर्श (आसमान) पर आराम किया (72, 90), अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है (43) पृथिवी बिछौना और आसमान छत (7) आसमानों को बिना खम्भे खड़ा किया और आसमान पर ठहरा (96) सूर्य-चन्द्र फिरते हैं, पृथिवी नहीं (99) पृथिवी के बीच पहाड़ खड़े किए जिससे वह हिल न जावे (112) बादलों के फटने से आसमान फट जावेगी (118) पहाड़ बादलों के समान चलते हैं (122) दो बार ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है (125) सात आसमान दो दिन में बनाए। मुर्दों को वह जीवित कर देता है (138) आसमान फट जावेगा (147) एक के ऊपर एक रखकर सात तल के बीच में सूर्य और चन्द्रमा को रखा (149) सूर्य लपेटा जावे, तारे गंदले हो जावें, पहाड़ चलाए जावें और आसमान की खाल उतारी जावे (154) आसमान फट जावे, तारे झड़ जावे, दरिया चीरे जावें, कबरें जिला कर उठाई जावे (155) आसमान बुर्ज वाला है (156)

कुरआन, निरक्षक मुहम्मद साहब पर एंजिल (देवदूत) गौबियल (जिब्राइल) के माध्यम से अरबी भाषा में नाज़िल हुआ (उतरा) मक्का में ऐकेश्वरवाद का विभिन्न कबीलों, ईसाई, यहुदी आदि धर्म के लोगों ने प्रबलतम विरोध किया। दस वर्ष तक संघर्षरत रह कर भी, सफलता न मिलने पर, मुहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना आ गए। इस यात्रा को हिजरत कहा जाता है। यहीं से यानी 622 से हिजरी सन् प्रारम्भ होता है।

काल गणना से वर्तमान 1438-622 करें तो इस्लाम को कालावधि 216 वर्ष होती है।

ईसा की उन्नीसवीं सदी (हिजरी लगभग 1100) से भौतिक एवं अन्तरिक्ष विज्ञान में अभूतपूर्व उन्नति हुई हैं जिसमें ईसाई धर्म, इस्लाम के साथ-साथ पौराणिक हिन्दु व जैन धर्म की सृष्टि सम्बन्धी सभी मान्यताएं पूर्णतया ध्वस्त हो चुकी हैं और वैदिक मान्यताओं की सम्पुष्टि हुई है। लेकिन ये मतानुयायी, धर्मानुयायी अभी तक उन अवैज्ञानिक मान्यताओं से ही चिपके हुए हैं।

कट्टरवादी धर्मान्ध इस्लाम के अनुयायियों ने उसी इस्लाम का परचम विश्वभर में फहराया था। तलवार के स्थान पर आज एके-47, आदि आधुनिकतम हथियार हैं।

अफ्रीकी देश नाइजीरिया का आंतकवादी सगठन 'वोको-हराम (शाब्दिक अर्थ परिश्चमी शिक्षा गलत है: पृथिवी को गोल नहीं चपटी मानता है। बारिश खुदा की मर्जी से होती है ; इसका सम्बन्ध सूर्य या वाष्पीकरण से बिल्कुल नहीं है। यह संगठन वर्तमान भूगोल और विज्ञान के खिलाफ है। बोको हराम सन् 2009 से लेकर 2016 तक भूगोल और विज्ञान के 600 शिक्षिकों को मौत के घाट उतार चुका है ओर 19,000 शिक्षिक नौकरी छोड़ कर भाग गए हैं। (दैनिक हिन्दुस्तान 13 अप्रैल 2016 पृष्ठ 21)

16 जुलाई 2017 को फेसबुक पर डा. जाकिर नाईक की एक क्लिप अंग्रेजी में पोष्ट हुई है। डा. नाईक गोविटी (Gravity) नामक फिल्म पर तत्काल प्रतिबन्ध चाहते हैं क्योंकि इस फिल्म में पृथिवी को गोल-अंडाकार बताया गया है जो कुरान के विरुद्ध है और इसीलिये मुसलमानों के लिए अपमानजनक है।'

आज भी, इस्लाम तलवार के बल पर ही सम्पूर्ण विश्व पर कब्जा जमाने में पूरी-पूरी आस्था रखता है। कुरआन में मुहम्मद साहब ने दुनियां को दो भागों में बांटा है। इस्लाम को मानने वाला (दारुल उस्लास) और इस्लाम को न मानने वाला (द्वारुल हरब/हर्ब) यह खूनी संघर्ष तब तक चलना चाहिए जब तक दुनियां में इस्लाम का राज्य न हो जावे।

भूगोल और खगोल सम्बन्धी अवैज्ञानिक मान्यताओं को मानने का इतना अधिक प्रबल दुराग्रह है तो इस्लाम के विश्वव्यापी विस्तार के लिये दी गई निम्नांकित हिदायतों को न मानने का, या उनके अनुसार न चलने का प्रश्न ही नहीं उठता है : **(क्रमशः)**

पृष्ठ 2 का शेष-धर्म का वास्तविक...

है ? अर्थात्, हान किस अवस्था का नाम है। हानोपाय अर्थात् दु:ख निवृत्ति का साधन क्या है ?

भगवान् बुद्ध और न्याय शास्त्र के प्रणेता महर्षि गौतम ने भी इसी धारणा पर विचार किया है, बल दिया है। महर्षि गौतम ने न्याय शास्त्र के प्रथम सूत्र में ही बता दिया है कि अपवर्ग या मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है और इसलिए इन सौलह तत्वों को जानकर उससे अनुरूप जीवन जीने पर मोक्ष प्राप्त होता है। वे कहते है, दु:ख जन्म प्रवृत्ति दोष मिथ्या ज्ञानानामुत्तरापाये तदन्तरापायादपवर्ग।

सांख्य दर्शन में भी इसी विषय पर विचार हुआ है कि दु:ख का अत्यन्ताभाव कैसे हो सकता है ? सांख्य का कहना है कि यह अत्यन्त पुरूषार्थ से ही संभव है-त्रिविध दु:ख अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त पुरूषार्थ। फिर योग दर्शन विषय को आगे गति देता हुआ कहता है कि यह कार्य बिना आत्म साक्षात्कार के संभव नहीं है। फिर योग दर्शन ने आत्मसाक्षात्कार के लिए योगाभ्यास आवश्यक बता दिया। कहा गया कि योगश्चित्तवृत्ति निरोध:। योग का अर्थ चित्त की पांचों वृत्तियों पर नियन्त्रण रखना। उनको इधर उधर भटकने से रोकना। यदि हमने चित्त वृत्तियों पर नियन्त्रण कर लिया तो तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम्। हम आत्मा के स्वरूप का दर्शन कर लेंगे। फिर योग के आठ अंग बना दिए। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि। आत्मा साक्षात्कार समाधि की स्थिति में होता है। वास्तव में इस विश्व में शान्ति और सौहार्द्र की भावना स्थापित करने में तो यम और नियम ही पर्याप्त हैं। यम में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह सम्मिलित हैं और नियम में शौच (सब प्रकार की पवित्रता) सन्तोष (धर्म पूर्वक किए गए अपने पुरूषार्थ जो धनार्जन हो उसे ही पर्याप्त मानना उसी में निर्वाह करना, किसी भी क्षेत्र में जो कुछ प्राप्ति हुई हो उसे ही पर्याप्त मान लेना) तप (श्रेष्ठ कर्मों के लिए प्रसन्नता पूर्वक कष्ट सहन करना) स्वाध्याय (आत्म साक्षात्कार और ब्रह्म साक्षात्कार कराने वाले ग्रन्थों का नियमित अध्ययन करना), ईश्वर प्रणिधान (सब कुछ परमात्मा) को समर्पित कर देना) नियम कहलाता है। यदि हम केवल इन्हीं गुणों का अपने अन्दर आधान कर ले तो हमारा ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो सकता है।

अब विषय को अधिक विस्तार न देते हुए हम यजुर्वेद के आधार पर कहते हैं कि जो सम्पूर्ण प्राणी मात्र को अपनी आत्मा के तुल्य देखता है, सबकी आत्मा में अपनी आत्मा को देखता है और अपनी आत्मा सबकी आत्मा को देखता है उसे कोई दु:ख और शोक नहीं होता है। सच्चा धर्म तो यही है कि हम प्राण को अपना मित्र समझे, सभी प्राणी भी हमें अपना मित्र समझे और फिर हम परस्पर मिल कर संसार में सुख और शान्ति स्थापित करने में सफलता पावें।

दृते दृ ँ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।। यजु. 36.18.

मेरी समझ से यही मनुष्य का सच्चा धर्म है।

आर्य समाज संत नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर संत नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव 1 सितम्बर 2017 से 3 सितम्बर 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। मुख्य उत्सव 3 सितम्बर 2017 को सुबह 9:30 बजे हवन यज्ञ के साथ शुरू होगा तथा 2:00 बजे ऋषि लंगर के साथ इस का समापन होगा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज, वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी, सांसद श्री संतोख चौधरी, विधायक श्री सुशील रिंकु, भाजपा उपप्रधान श्री मोहिन्दर भगत, श्री अमरजीत कौर मेजर कौंसलर आदि विशेष रूप से शामिल होंगे। श्री विजय शास्त्री जी के द्वारा वेद कथा की जाएगी। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम में सपरिवार पधार कर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं। **जयचन्द भगत प्रधान आर्य समाज संत नगर**

कृष्णा जन्माष्टमी पर्व मनाया

आज दिनांक 15-8-2017 को आर्य समाज तलबाड़ा में कृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूम-धाम से मनाई गई प्रात: साढ़े आठ बजे वैदिक यज्ञ पुरोहित परमानन्द आर्य द्वारा कराया गया। यज्ञ के पश्चात् भगवान कृष्ण के जीवन पर विचार दिये यज्ञ में सभी सदस्य शामिल हुए सभी ने बड़ी श्रद्धापूर्वक हवन यज्ञ में आहुतियां डाली। भगवान कृष्ण का जीवन परोपकार और धर्म की स्थापना में ही व्यतीत हुआ। महाभारत के युद्ध में पाँडवों को विजय दिलाई राक्षसों का नाश किया। दुर्योधन जैसे दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों को उनके दुष्ट कर्म करने का फल प्राप्त हुआ। युधिष्ठर और उनके भाईयों को उन का खोया हुआ राज्य दिलाया इसलिए भारत ही नहीं सारे संसार में उनको श्रद्धापूर्वक याद किया जाता है। **पुरोहित परमानन्द आर्य**

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर का स्थापना दिवस मनाया

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज शक्ति नगर का स्थापना दिवस 13 अगस्त 2017 रविवार को आर्य समाज शक्ति नगर, अमृतसर के प्रांगण में बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से प्रधान श्री दर्शन कुमार जी की अध्यक्षता में मनाया गया कार्यक्रम का शुभारम्भ पं. शक्ति कुमार ने वेद मन्त्रों का उचारण कर हवन यज्ञ से किया। इस अवसर पर 10 बच्चों को यज्ञोपवीत धारण करवाए गए। गौरव तलवाड़, विवेक आर्य, बहन शारदा तथा कुमार रजनी ने अपनी मीठी वाणी से प्रभु भक्ति, ऋषि महिमा तथा देश भक्ति के भजनों को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रि. श्री जे. पी. शूर निर्देशक डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्ध कृत्री' समिति नई दिल्ली विशेष रूप से पधारे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य हरीश चन्द्र जी विद्यावाचस्पति (राजस्थान) ने अपने उधबोधन में परम पिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त कर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 ई. में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना बारे तथा आर्य समाज के पहले तथा छठे नियम पर प्रकाश डाला। भारत की स्वाधीनता बारे अजादी के दीवानों चन्द्रशेखर आज़ाद, शहीद भगत सिंह , राम प्रसाद बिस्मिल तथा अनेकों देश भक्तों का जिक्र करते उनके प्रति देश भक्ति पर अपने विचार प्रकट किए और आए परिवारों को आर्य बनाने के सम्बन्ध में मूल मन्त्र दिए।

कार्यक्रम में अमृतसर की आर्य समाजों के सभी पदाधिकारी श्री इन्द्रपाल आर्य, इन्द्रजीत ठुकराल, मन्त्री राकेश मेहरा, मुकेश आनन्द, जुगल किशोर आहुजा, धर्म वीर, दीपक, अतुल, विजय ढींगरा, धर्मपाल के अतिरिक्त डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं से प्रिंसीपल श्री राकेश कुमार, अजय बेरी, परमजीत छाबड़ा, श्रीमति पुष्पिन्दर वालिया, नीरा शर्मा, सुनीता शर्मा, इन्दु अरोडा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में ऋषि लंगर वितरण किया गया। **-राकेश मेहरा महामन्त्री, अमृतसर**

यज्ञोपवीत संस्कार

आर्य समाज मन्दिर जी. टी. रोड़ फिरोजपुर छावनी में 'कृष्ण जन्माष्टमी' के उपलक्ष्य में आर्य युवकों को, आर्य वीरांगनाओं की ओर से आर्य पुरुषों महिलाओं को ''यज्ञोपवीत संस्कार'' के निमित्त विशेष यज्ञ का अनुष्ठान करके आचार्य देवराज जी शास्त्री (कपूरथला) ने यज्ञोपवीत धारण करवाऐं। आचार्य जी देवराज शास्त्री जी ने कहा कि जिस प्रकार श्री कृष्ण जी ने आजीवन धर्म में नीतियों को निभाते हुए जीवन की हर चुनौतियों को बड़ी सूझबूझ से पार किया और हमारे लिये एक आदर्श जीवन रखा। हम भी यज्ञोपवीत के इन तीनों पवित्र धागों में निहित ऋणों को सामने रखते हुए उससे उऋण होने का तन-मन-धन से पूर्ण प्रयास करें।

प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने कहा कि इस सफेद पवित्र यज्ञोपवीत की तरह ही हम ईश्वर माता-पिता और गुरुओं का आदर-सम्मान करते हुए इन को आज्ञाओं का पालन करते हुए अपना जीवन सफल करें। उन्होंने श्री कृष्ण जी की जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने जीवन के हर मोड़ पर सभी समस्याओं का समाधान प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार और यथायोग्य के वेदानुकूल नियम पर निकाला।

शान्ति-पाठ के उपरान्त कार्यक्रम का समापन किया गया और जलपान का आयोजन रखा गया।

-मनोज आर्य महामन्त्री, फिरोजपुर छावनी

स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में 71वां स्वतन्त्रता दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। स्कूल के बच्चों ने देश भक्ति के गीत गाकर और नृत्य प्रस्तुत करके समां बांध दिया। कक्षा 10+2 की छात्राओं ने रंगीला रंगीला देश मेरा रंगीला पर नृत्य प्रस्तुत किया। स्कूल के अध्यापको ने बच्चों को आजादी दिवस की बधाई दी। प्रिंसीपल मैडम ने बच्चों को अपने बधाई संदेश में आजादी दिवस का महत्व बताया और कहां कि यह शुभ दिवस भारत के इतिहास का सुनहरा दिवस है। हमें अपने देशभक्तो की कुर्बानियों को व्यर्थ नहीं जाने देना जिनकी खातिर आज हमें आजाद भारत के नागरिक कहलाने का गौरव प्राप्त है। समारोह का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

आर्य समाज नवांशहर में श्रावणी पर्व मनाया

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में विभिन्न परिवारों में हवन यज्ञ करते हुये आर्य समाज नवांशहर के सदस्य एवं पदाधिकारी।

श्रावणी पर्व पर आर्य समाज नवांशहर द्वारा 7 अगस्त से 15 अगस्त तक 35वां वार्षिक वेद प्रचार एवं जन सम्पर्क अभियान श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष नवांशहर के प्रसिद्ध डाक्टरों के अस्पतालों एवं निवास स्थानों में यज्ञों का आयोजन किया गया। इसमें वयोवृद्ध आर्य नेता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल ने विशेष प्रयास किये। यज्ञों का आयोजन निम्न स्थानों पर हुआ।

दिनांक 7.8.2017 सोमवार को सायं 4.30 बजे डा. रविन्द्र कारा कुलाम रोड नवांशहर में, दिनांक 8.8.2017 मंगलवार को सायं 4.30 बजे डा.ए.के. राजपाल राहों रोड नवांशहर, दिनांक 9.8.2017 बुधवार को प्रात: 8.00 बजे डा. वी.के. अरोडा रेलवे रोड नवांशहर, दिनांक 10.8.2017 वीरवार को सायं 4.30 बजे डा. अश्विनी धीर मोता सिंह नगर नवांशहर, दिनांक 11.8.2017 शुक्रवार को सायं 4.30 बजे डा. एस.के. सूदन चण्डीगढ़ रोड आईटीआई के सामने नवांशहर, दिनांक 12.8.2017 शनिवार को प्रात: 8.30 बजे डा. आर.के. शर्मा सलोह रोड नवांशहर, दिनांक 13.8.2017 रविवार को सायं 4.30 बजे डा. जे.डी. वर्मा राहों रोड नवांशहर, दिनांक 14.8.2017 सोमवार को सायं 4.30 बजे डा. हरीश भारज प्रो. कालोनी नवांशहर और दिनांक 15.8.2017 मंगलवार को प्रात: 8.30 बजे एडवोकेट धीरज सहजपाल खारा कालोनी, राहों रोड नवांशहर में पारिवारिक सत्संग व हवन यज्ञ किया गया। यज्ञ आर्य समाज नवांशहर के पुरोहित अमित कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा अमित शास्त्री ने श्रावणी पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुये अपने व्याख्यानों में कहा कि मनुष्य की अभ्युन्नति धर्माचरण से है और धर्माचार की शिक्षा का आधार वेद है। अर्थात जिस आचार विचार की शिक्षा के द्वारा मानव जीवन का नव निर्माण होता है। उसका आधार केवल वेद ही है क्योंकि वेद आदि काल में प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान है। वेद के द्वारा ही मनुष्य ज्ञान विज्ञान की शिक्षा पालने और उसी के अनुसार शुभाचरण करके अपने जीवन का विकास व सुधार कर सकता है। अतएव प्रत्येक उन्नतिशील नर नारी को वेद का स्वाध्याय व पठन पाठन सदैव करते रहना चाहिये क्योंकि वेद ही सम्पूर्ण धर्मों, कर्त्तव्य कर्मों का मूल स्रोत है और वेद के ज्ञाता विद्वानों द्वारा कृत स्मृति आदि ग्रंथ व शील आचार विचार और साधुजनों को आंतरिक आत्म सन्तुष्टि प्रद शिक्षा का आदि मूल वेद ही है। जब तक आर्य जाति के पठन पाठन और वेदानुसार जीवन जीते रहे तब तक उनकी प्रत्येक प्रकार से अभ्युन्नति भी होती रही किन्तु जब वेदाध्ययन की प्रथा न रही तब से धीरे धीरे अधोगति को प्राप्त हो गई। प्राचीन काल में ऋषि मुनि इस बात का बड़ा ध्यान रखते थे कि मानव जीवन में उक्त दोष न आने पावें और वेदाध्ययन द्वारा आचार विचार की शिक्षा सदैव मिलती रहे इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने श्रावणी पर्व का विधान किया। श्रावणी वेद स्वाध्याय का पर्व है स्वाध्याय को इतना महत्व देने का उद्देश्य यही है कि जिस प्रकार शरीर की स्थिति व उन्नति अन्न से होती है उसी प्रकार सारे शरीर का राजा मन का भी उत्कर्ष और शिक्षण स्वाध्याय से ही होता है। और मानसिक उन्नति के बिना आत्मिक उन्नति संभव नहीं है। स्वाध्याय से मानव मस्तिष्क स्वच्छ और पारदर्शी बन जाता है। जब तक हमारे राष्ट्र में वैदिक ज्ञान के संदेश वाहक ऋषि मुनि इस महान पर्व को सही ढंग से मनाते रहे जब तक पावनी वैदिक ऋचाओं का गान घर घर में गूंजता रहा तब तक सम्पूर्ण मानव मानवता एक ईश्वर एक धर्म एक अभिवादन, एक भाषा धारण कर सुख शान्ति लाभ करता रहा। परन्तु जब दुर्भाग्य वश मानव श्रावणी के पवित्र संदेश को वेदाज्ञा को भूल गया तब से अज्ञान की घनघोर घटा छाने लगी और मानव वेदों को भूल कर अशान्त व दुखी हो गया ऐसी ही अज्ञानता की रात्रि को दूर करने के लिये ईश्वर की असीम अनुकम्पा से उसकी व्यवस्था से एक मुक्तात्मा महर्षि दयानन्द ने फिर से वेदों की ओर लौटो का संदेश देते हुये मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र व योगी राज श्री कृष्ण जी के जीवन व उनकी वेदोक्त जीवन चर्या को दिखलाते हुये गम्भीर उद्घोष किया कि वेद का पढना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है और आर्य समाज उसी परमधर्म का पालन का संदेश देता हुआ विश्व भर में ऋषि आज्ञा को शिरोधार्य करके श्रावणी उपाकर्म मनाता है।

आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने सभी यज्ञमानों को स्मृति चिन्ह व वैदिक साहित्य भेंट किया तथा सभी सजमानों का धन्यवाद करते हुये अपने उद्बोधनों में कहा कि आर्य समाज कोई मत पंथ व सम्प्रदाय विशेष नहीं है यह तो वेदाज्ञा के अनुसार जीवन जीने के लिये प्रेरित करने वाली संस्था है जो मानव मात्र का कल्याण व उन्नति चाहती है। महर्षि दयानन्द ने तभी तो आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम आर्य समाज का क्या उद्देश्य है यह अंकित किया है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। परन्तु यह तभी संभव है यदि हम वेदों की शिक्षा का अनुकरण करेंगे और अपने जीवन को वेदों की शिक्षा के अनुकूल ढालेंगे। श्रावणी का पर्व राष्ट्र शरीर में व्याप्त बौद्धिक दिवालियेपन के महारोग की महोषधि है जिसका सेवन सभी आर्यों को करना बहुत ही आवश्यक हो गया है ताकि हम परमात्मा के श्रेष्ठ पुत्र आर्य कहलाने के अधिकारी बन सके।

इन अवसरों पर यज्ञमान परिवारों के साथ साथ इन महानुभावों ने भी नौ दिनों तक यज्ञ में प्रतिदिन सम्मिलित होकर श्रावणी पर्व पर आर्य समाज का सहयोग किया। सर्वश्री जिया लाल शर्मा, कुलवन्त राय शर्मा, एडवोकेट देशबन्धु भल्ला, वीरेन्द्र सरीन, राजीव कश्यप, नन्देश, अमर सिंह, प्रि. तरुणप्रीत वालिया, प्रि. अचला भल्ला, प्रि. आरती कालिया, श्रीमती सुमन राजपाल, श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री विकास नारद, श्रीमती विकास नारद, श्री अमित शर्मा, श्री अरविन्द नारद।

कृष्ण जन्माष्टमी और श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ

हमारे देश में प्राचीन काल से ही अनेक पर्वों और उत्सवों को मनाने की परम्परा रही है। इसी संदर्भ में आर्य समाज वेद मंदिर गांधी नगर-2 में दिनांक 12 अगस्त को श्रावणी पर्व एवं कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें पं. कृष्ण आर्य जी ने पुरोहित की भूमिका निभाते हुये वैदिक मंत्रों के साथ हवन यज्ञ में पवित्र आहूतियां डलवाई। इस अवसर पर पं.कृष्ण आर्य ने श्रावणी पर्व और योगीराज कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुये बताया कि सुखी और उन्नत जीवन के लिये दो गुणों की आवश्यकता है। एक विद्वता और दूसरा बल। श्री कृष्ण जी में यह दोनों गुण विद्यमान थे। उनकी बुद्धिमता और नीति के कारण ही कम शक्ति के होते हुये भी महाभारत के युद्ध में पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की और शक्तिशाली, अत्याचारी राजा जरासंध को मार गिराया।

श्री कृष्ण ने शारीरिक बल के सहारे ही अत्याचारी राजा कंस को यमलोक पहुंचा दिया और घमण्डी शिशुपाल का वध कर दिया। उन्होंने बताया कि कृष्ण एक आदर्श पुरुष थे और उन्होंने अपने कार्यों तथा विचारों के द्वारा महान आदर्शों की स्थापना की। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उन्हें आप्त पुरुष और महात्मा कहा। लेकिन खेद है कि ऐसे महान और गौरवान्वित चरित्र को कालान्तर में उसी महापुरुष के देशवासियों ने अत्यन्त विकृत और कलंकित बना दिया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व और श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में आर्य समाज वेद मंदिर गांधी नगर-2 जालन्धर में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन एवं बच्चे।

इस हवन यज्ञ में आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री ताराचंद जी ने यजमान की भूमिका निभाई। इस अवसर पर आर्य समाज मंदिर के प्रधान श्री सूबेदार अमरनाथ, महामंत्री श्री रविन्द्र कुमार, संरक्षक बूटी राम, सुरजीत सिंह, कमल जी, जोगिन्द्र, लक्की, पुरुषोत्तम एवं आर्य समाज के अन्य सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

-रविन्द्र कुमार, मंत्री

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।